चतुर्थाऽनुवाकः।

अग्निहीता वेत्वग्निः। होनं वेतु प्रावित्तम्। स्मी व-यम्। साधु ते यजमानदेवता। घृतवितीमध्वर्थी सुच-मास्यस्व। देवायुवं विश्ववाराम्। ईडामहै देवा ईडे-न्यान्। नमस्यामं नमस्यान्। यजाम यज्ञियान्॥१॥ अग्निहीता नवं॥ अनु० ४॥

पञ्चमा रनुवाकः।

स्मिधी अम् आर्चस्य वियन्तु। तनुनपादम् आ-च्यस्य वेतु। इडो अम् आर्चस्य वियन्तु। विहर्मम् आ-च्यस्य वेतु। स्वाहामिम्। स्वाहा सोर्मम्। स्वाहामिम्। स्वाही पुजापितम्। स्वाहामीषामा। स्वाहेन्द्रामी॥ स्वाहेन्द्रम्। स्वाही महेन्द्रम्। स्वाही देवा आञ्च-पान्। स्वाहामि होचा जुंषाणाः। अम् आर्चस्य वि-यन्तु॥ १॥

इन्द्रामी पच च॥ अनु०५॥

षष्टे। उनुवाकः।

अग्निर्श्वाणि जङ्गनत्। दुविणस्युर्विपन्यया। स-मिडः शुक्र आहेतः। जुषाणो अग्निराज्यस्य वेतु। त्वः